अध्याय 42

उपसंहार

यहोवा के दूसरे संदेश के बाद अय्यूब ने एक घोषणा की जिसे ''पूरी कविता की स्र्वोच्च बात'' माना जा सकता है।[1] यहोवा के साथ आमने सामने बात करने की अय्यूब की तीव्र इच्छा मान ली गई थी; यहोवा ने उसके साथ आंधी में से बात की थी। पहले संदेश का अय्यूब का उत्तर असीम परमेश्वर की उपस्थिति में अपने सीमित होने को मान लेना था (40:3–5)। दूसरे संदेश के लिए उसका उत्तर परमेश्वर के संसार में उसके कामों के प्रति अज्ञानता को मान लेने से कहीं बढ़कर था (42:1–6)। फिर यहोवा ने अय्यूब के तीनों मित्रों को डांट लगाई (42:7–9)। फिर हमें पता चलता है कि यहोवा ने अय्यूब को दोगुणी सम्पत्ति लौटा दी उसका स्वास्थ्य लौट आया और उसे दस और बच्चे दिए गए (42:10–17)।

अय्यूब का अंगीकार (42:1–6)

[1]तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया, [2]''मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। [3]तू ने पूछा, 'तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?' परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। [4]तू ने कहा, 'मैं निवेदन करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, तू मुझे बता।' [5]मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; [6]इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।''

आयत 1. तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया। अय्यूब के उत्तर की भूमिका उसके पहले उत्तर में इस्तेमाल किए गए शब्दों वाली ही है (40:3)।

आयत 2. ''मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।'' इस पद्य और अय्यूब की पुस्तक की मुख्य धारणा का परिचय मिलता है, ''मैं जानता हूं।'' ''जानता'' मूल इब्रानी शब्द *yd'* (*यद*) से लिया गया है। इस मूल शब्द से चार शब्द लिए गए हैं: ''जानता'' (दो बार), ''ज्ञान,'' और ''बता'' (मूलतया, ''समझा'')।

Yd' (*यद*) के सबसे महत्वूपर्ण अध्यायों में से एक एबर्डहर्ड बामन द्वारा किया गया था। उसका शोध यह था कि ''ज्ञान'' इच्छा और भावनाओं सहित सम्पूर्ण व्यक्ति को शामिल किए जाने वाला अनुभव है। यह व्यक्तिगत सम्बन्धों में व्यक्तिगत अनुभवों के द्वारा प्राप्त की गई जानकारी है। उसने इस शब्द में समाहित व्यक्तिगत निजी सम्बन्धों पर ज़ोर दिया:

> इसलिए *yd'* (*यद*) यहां पर मूलतया एक व्यक्गित सम्बन्ध को दर्शाता है जिसके आधार पर निकट सम्प्रेषन (सहभागिता) होता है; न केवल ज्ञान का बल्कि इससे भी बढ़कर आदर, प्रेम, परवाह, अच्छे कामों, सेवाओं, आदि की अदला बदली। इस कारण, इब्रानी

शब्द का अर्थ वास्तव में सामान है; न केवल भरोसेमंद बल्कि आदरणीय, प्रिय, लोकप्रिय, और व्यक्ति की परवाह के लिए भी है। हमारी जांच के लिए यह स्थापित तथ्य आवश्यक महत्व का है।[2]

मध्यकाल के बड़े यहूदी दार्शनिक मोज़ज़ मेमोनाइड्स ने बहुत पहले अय्यूब की पुस्तक को समझने के लिए ज्ञान के महत्व का सुझाव दिया। उसने पाया कि बाइबली वचन जिसे अय्यूब की खराई तथा नैतिक गुणों वाला माना जाता है न कि ज्ञान का।[3] ज्ञान की कमी के कारण ही अय्यूब ने वर्तमान गड़बड़ी तथा अपने दु:ख की निरर्थकता के विरुद्ध बातें की।[4] उसने कहा, ''जैसे ही [अय्यूब] को परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हुआ, उसने मान लिया कि परमेश्वर के ज्ञान में सचमुच का परम सुख है; यह उन सब को जो इस ज्ञान को पा लेते हैं मिलता है और संसार का दु:ख इसे परेशान नहीं कर सकता है।''[5] मेमोनाइड्स की बात का महत्व ओर बढ़ जाता है जब हम उन सब कष्टों पर ध्यान करते हैं जो उसने ग्यारहवीं सदी ई. में उत्तरी अफ्रीका तथा स्पेन में मुस्लिमों के बीच एक यहूदी के रूप में रहते हुए व्यक्तिगत रूप में सहे।

जैसा कि हमने देखा है अय्यूब की पुस्तक की अधिकतर बहस इस बात पर है कि परमेश्वर तथा मनुष्यों के साथ उसके तरीकों के बारे में क्या ज्ञात है और क्या ज्ञात नहीं है।[6] यहां पर अय्यूब ने माना कि ''मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है।'' उसने इस बात को समझा कि परमेश्वर के पास सब कुछ करने की सामर्थ है (उत्पत्ति 18:14; मत्ती 19:26; लूका 1:37), क्योंकि संसार पर उसी का नियन्त्रण है। अय्यूब ने इस बात को जान लिया कि परमेश्वर की सामर्थ उसकी इच्छा के साथ मेल खाती है जिससे उसकी ''युक्तियां रूक'' या ''विफल'' नहीं हो सकती (दानिय्येल 4:35)।

आयत 3. ''तू ने पूछा, 'तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?''' अय्यूब ने लगभग शब्दश: अपने अंगीकार को दोहराने लगा, आंधी के बीच में से यहोवा के पहले शब्दों को ''यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ना चाहता है'' (38:2)। NIV और हिंदी में उद्धहरण से पहले कोष्ठकों से पहले ''तू ने पूछा'' डालकर वचन को सरल किया गया है।

''परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था।'' आयत 3 का दूसरा वाक्य अय्यूब का अपना कथन है, ''परन्तु'' के साथ आरम्भ होने वाला विचार करने वाला वाक्य खण्ड। ऐसा इसलिए था क्योंकि वह ''नहीं जानता था'' कि उसने ''जो नहीं समझता था वही कहा।'' अय्यूब को अब समझ में आ गया कि उसने अत्यधिक सीमित दृष्टिकोण से रूखे ढंग से बात की थी। संसार की जटिलताओं के बारे में मनुष्य क्या जान सकता है? वह सब वस्तुओं के सृजनहार और पालनहार के सर्वज्ञान सर्वशक्ति के सामने दीन होकर छूट गया। उसे पता चल गया कि यहोवा सब कुछ कर सकता है। यह किताबी ज्ञान नहीं था बल्कि सीधे उसी की मुलाकात से मिला ज्ञान था जिसने ''पृथ्वी की नींव बांधी'' (38:4)।

''जो बातें मेरे लिए अधिक कठिन'' *pala'* (*पाला*) से लिया गया है, जो अय्यूब की पुस्तक में छह बार आने वाला एक क्रिया शब्द है (5:9; 9:10; 10:16; 37:5, 14; 42:2)। हर बार इसका इस्तेमाल परमेश्वर के उन ढंगों के वर्णन के लिए किया गया है जो अद्भुत और अथाह

है। परमेश्वर के ढंग मनुष्य के अनुभव से बहुत परे है; इसलिए मनुष्य उन्हें जान नहीं सकता।

आयत 4. '''मैं निवेदन करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, तू मुझे बता।''' इस आयत की व्याख्या परमेश्वर के एक और उदाहरण के रूप में की जा सकती है (देखें 42:3)। परमेश्वर ने यह कहते हुए "मैं तुझ से प्रश्न करता हूं, और तू मुझे उत्तर दे" दो बार आंधी में से अय्यूब के साथ बात की थी (38:3; 40:7)।

एक व्याख्या यह है कि अय्यूब परमेश्वर के प्रति अपनी विनम्रता को दिखा रहा था। इस आयत का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है कि: "सुन मैं प्रार्थना करता हूं, और जहां तक मेरी बात है, मैं बोलूंगा। मैं तेरे बारे में पूछूंगा और तु मुझे समझा।" अय्यूब अब कोई मांग नहीं रख रहा था वह परमेश्वर की इच्छा को जानने और परमेश्वर के मार्गों पर चलने का इच्छुक था।

आयत 5. "मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं।" ए. एस. पीक ने इस आयत को "पुस्तक का सबसे बड़ा सबक कहा।"[7] साफ है कि यहोवा के संदेशों के बाद जो कुछ अय्यूब को परमेश्वर का ज्ञान हुआ था वह उससे फर्क था जो उसे पहले था। यह उसके द्वारा समुच्य बोधक/क्रिया-विशेषण के मेल का इस्तेमाल "परन्तु अब" *w*[e]*'aththah* (*वेआयथाह*) के मेल का इस्तेमाल करने से पता चलता है जो उसके "सुनने" और "देखने" के बीच अंतर का पता देता है। यह अंतर ज्ञान के दो अलग-अलग स्त्रोतों के बीच का लगता है। "सुनना" उस ज्ञान को दर्शाता है जो किसी दूसरे के अनुभव से मिला है यानी यह कल्पनिक ज्ञान है। यह एक से दूसरी पीढ़ी दर पीढ़ी परम्पराओं द्वारा पहुंचाया गया ज्ञान है। दूसरी ओर "अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं।" निजी ज्ञान के विचार को दर्शाता है, यानी परमेश्वर के साथ आनमे सामने से मिलने से प्राप्त ज्ञान। इस अवधारणा को संक्षिप्त करते हुए टेरियन ने कहा:

> परमेश्वर का ज्ञान सुनी सुनाई बातों से, ज्ञान की बातें सिखाने वालों की परम्परा से, प्राचीनकाल की गवाही से और बड़े बज़ुर्गों की बातों से मिला था। उसका धर्म विरासत में है यानी यह दूसरे से लिया गया है। परम्परागत धर्मशिक्षा खुशहाली के समय में संतोषजनक लग सकती है। परन्तु यह समाज के ठुकराए जाने और परमेश्वर द्वारा अलग किए जाने पर बेकसी और पीड़ा के थपेड़े बर्दाश्त नहीं कर सकती। परन्तु अब परमेश्वर के साथ आमने सामने बात करने के द्वारा जिसे कवि ने आंधी के बीच में से उस आवाज के मूल भाव इसका इस्तेमाल करते हुए वर्णन किया, धर्म का नायक का ज्ञान बिल्कुल अलग स्त्रोत से मिलता है; और इस बिल्कुल नई वास्तविकता को व्यक्त करने का उसका एकमात्र तरीका यह कहना है कि *मेरी आंखें तुझे देखती हैं*।[8]

अब अय्यूब को अपनी सही इच्छा की समझ आ गई जो उसने अध्याय 19 में पहले व्यक्त की थी। उसने उस छुटकारा दिलाने वाले को देख लिया जिसके लिए उसने माना था कि वह उसे जानता है (19:25)। विश्वास की नज़र से अय्यूब को अब समझ में आ गया कि परमेश्वर ने उसे कभी त्यागा नहीं था।

आयत 6. "इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।" NASB इस क्रिया शब्द *ma'as* (*मास*) का अनुवाद "खण्डन" हुआ है। इस शब्द का बुनियादी अर्थ "नकारना" है।[9] यह तथ्य कि इस क्रिया शब्द का कोई सीधा

उद्देश्य नहीं है इस संदर्भ में इसके संक्षिप्त अर्थ को तय करना और कठिन बना देता है। कई संस्करणों में यह संकेत है कि सीधा उद्देश्य अय्यूब का संकेत है: ''मैं अपने आप से घृणा करता हूं'' (KJV; ASV) या ''मैं अपने आपको तुच्छ मानता हूं'' (NIV; NRSV)। NASB के साथ सहमत होते हुए अन्य संस्करणों में ''खण्डन'' है जो कि यह संकेत देता है कि अंतर्निहित सीधा उद्देश्य वही है जो अय्यूब ने कहा था (TEV; NJB; NLT)। अय्यूब ने अपने उतावली में दिए गए निर्णयों पर अब राय बदल दी। जो कमज़ोर प्रमाण के आधार पर थी। वास्तव में उसने उसकी जिसका उसे पता था घोषणा की थी, यानी उन असाधारण बातों की जिन्हें उसकी समझ नहीं थी (42:3)।

क्रिया शब्द ''पश्चात्ताप'' (*nacham, नाचम*) का अर्थ ''अपने कामों के लिए शर्मिंदा होना, अफ़सोस करना, दु:खी होना, मन फिराना।''[10] इब्रानी बाइबल में चाहे ''पश्चात्ताप'' के लिए यह सामान्य शब्द नहीं है परन्तु इसमें उस अधीनता का विचार है जो मिलाप का कारण बनती है। एच. एच. रोअले ने लिखा है, ''अय्यूब का पश्चात्ताप उसके किसी पाप के लिए नहीं है जिसके कारण उस पर दु:ख आया हो, जैसा कि मित्रों द्वारा कहा गया था। यह उन बातों के विषय में है जो उसने अज्ञानता में बहस करते हुए कह दी थी''[11] ''धूल और राख'' के सम्बन्ध में विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है:

> 2.8 में अय्यूब को राख के ढेर पर बैठे हुए दिखाया गया है। 2.12 में अय्यूब के मित्र उसकी हालत देखते हैं और अपना दु:ख जताने के लिए वे अपने सिर पर राख डाल लेते हैं। 30.19 अय्यूब अपने दु:ख को धूल और राख के साथ मिलाता है। धूल और राख में बैठकर अपने सिर पर डाल लेना शोक करने तथा पश्चात्ताप करने की परम्पराएं थीं।[12]

अय्यूब ने अपने आपको खरा आदमी साबित कर दिया। उसके ऊपर आने वाली सभी विपदाओं तथा बीमारी के बीच अपने चरित्र को बनाए रखा। यहां पर परमश्‍वर से उसके अलगाव के अर्थ को हार मिली। उसे अभी भी नहीं मालूम था कि उसे क्यों दु:ख उठाना पड़ा था। परन्तु उसे मालूम था कि यहोवा ने उसे छोड़ा नहीं। यहोवा के साथ उसकी संगति तथा सहभागिता का बोद्ध फिर से बहाल हो गया। अब वे किसी भी बात को जो शैतान की ओर से उसकी ओर फैंकी जाए दृढ़ता के साथ मान सकता था। अय्यूब उस बात को जो पौलुस प्रेरित ने कई सदियों के बात कही संजीव उदाहरण हैं: ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)।

तीनों मित्रों को परमेश्वर की डांट (42:7-9)

[7]ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये बातें अय्यूब से कह चुका, तब उसने तेमानी एलीपज से कहा, ''मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही। [8]इसलिये अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छाँटकर मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की प्रार्थना मैं ग्रहण करूँगा; और

नहीं, तो मैं तुम से तुम्हारी मूढ़ता के योग्य बर्ताव करूँगा, क्योंकि तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नहीं कही।'' [9]यह सुन तेमानी एलीपज, शूही बिलदद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण की।

आयत 7. यहोवा ने एक बार फिर से बात की! उसने **तेमानी एलीपज** से अपने शब्द कहे, सम्भवतया इसलिए कि वह मित्रों में से सबसे बड़ा था। प्राचीनकाल की परम्परा में बूढ़े व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती थी और अय्यूब के साथ सबसे पहले बात करने वाला एलीपज ही था (अध्याय 4)। परमेश्वर ने कहा, ''**मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही।**'' यहोवा ने अय्यूब और मित्रों के बीच का मुद्दा एक ही बार सदा के लिए सुलझा दिया। रोअले ने बताया है:

> मित्रों ने यह कहा था कि गुण और अनुभव एक से थे और स्पष्ट तौर पर मेल खाते थे, जबकि अय्यूब ने घोषणा की थी कि वे बिल्कुल मेल नहीं खाते थे। इस बात पर अय्यूब सही था, चाहे उसने इससे गलत निष्कर्ष निकाले थे; परन्तु मित्र निश्चय ही गलत थे, जैसा कि [पुराना नियम] बार बार स्पष्ट कर देता है।[13]

अय्यूब दोषमुक्त था। वह पक्का पापी नहीं था जो उन्होंने उसे बना दिया था।

यहां पर तीनों मित्र परमेश्वर की गलत ब्यानी के कारण उसके ''क्रोध'' के अधीन थे। दूसरी ओर अय्यूब की स्वीकृति का संकेत ''मेरा दास अय्यूब'' के पदनाम से मिलता है जो आयतें 7 और 8 में चार बार आता है (1:8; 2:3 पर टिप्पणियां देखें)। मजे की बात यह है कि एलीहू का कोई उल्लेख नहीं था।

आयत 8. अय्यूब से आराधना और बलिदान देने में मित्रों की अगुआई करने को कहा गया ताकि परमेश्वर का क्रोध उनके ऊपर न फूटे। पुस्तक का आरम्भ अय्यूब के अपने के लिए बलिदान चढ़ाने के साथ हुआ था (1:5)। इस प्रकार से सिफारिश करने वाले के रूप में उसकी भूमिका को पुस्तक में बराबर समझा गया। पुराने नियम में विश्वास के और बड़े लोगों में मध्यस्थ का काम किया, जिसमें अब्राहम (उत्पत्ति 18:22-33; 20:7-18), मूसा (निर्गमन 32:11-14; गिनती 14:13-19; 21:7; व्यवस्थाविवरण 9:20), और शमूएल (1 शमूएल 7:5-11; 12:19-25)। अय्यूब की प्रार्थना के परिणामस्वरूप परमेश्वर ने मित्रों को उनकी मूड़ता का दण्ड नहीं देना था।

आयत 9. मित्रों के नाम उसी क्रम में दिए गए हैं जैसे आरम्भ में दिए गए थे: **तेमानी एलीपज, शूही बिलदद और नामाती सोपर** (देखें 2:11)। इस बात का उन्हें श्रेय जाता है कि उन्होंने **यहोवा** की बात मान ली और उसने उनके लिए **अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण** की। ''ग्रहण की'' का अनुवाद इब्रानी भाषा से हुआ है जिसका अर्थ है ''मुंह ऊपर उठना।''

परमेश्वर का अय्यूब के जीवन को फिर से खुशहाल करना और अय्यूब को बच्चों की आशीष देना (42:10-17)

[10]जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर

किया, और जितना अय्यूब के पास पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया। [11]तब उसके सब भाई, और सब बहिनें, और जितने पहले उसको जानते पहिचानते थे, उन सभों ने आकर उसके यहाँ उसके संग भोजन किया; और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी, उस सब के विषय उन्होंने विलाप किया, और उसे शान्ति दी; और उसे एक एक सिक्का और सोने की एक एक बाली दी। [12]यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौद हज़ार भेड़ बकरियाँ, छः हज़ार ऊँट, हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गदहियाँ हो गईं। [13]उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी उत्पन्न हुईं। [14]इन में से उसने जेठी बेटी का नाम यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का केरेन्हप्पूक रखा। [15]उस सारे देश में ऐसी स्त्रियाँ कहीं न थीं, जो अय्यूब की बेटियों के समान सुन्दर हों; और उनके पिता ने उनको उनके भाइयों के संग ही सम्पत्ति दी। [16]इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश, बेटे पोते देखने पाया। [17]अन्त में अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु, पुरनिया और दिनों से तृप्त होकर मर गया।

पुस्तक का समापन अय्यूब की स्थिति के बहाल होने के साथ होता है। रोअले ने इस उपसंहार को, ''पुस्तक की कारीगरी के मांग'' माना। उसने कहा कि ''बिना इसके यह काम गम्भीरतापूर्वक अधूरा होगा।''[14] चाहे यह साहित्यिक दृष्टिकोण से हो सकता है परन्तु निश्चय ही यह धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से सही नहीं है। निश्चय ही हमें अय्यूब के स्वास्थ्य, उसकी सम्पत्ति और उसके परिवार का बहाल हो जाना अच्छा लगता है। परन्तु क्या होता यदि अय्यूब की पुस्तक का अंत दसवीं आयत के साथ होता जिसमें केवल इतना कहा है, ''और अय्यूब मर गया''?

बहुत से लोगों के लिए उनके दिन बदलना अय्यूब की तरह कठिन परिस्थितियों में से निकलने के बाद नहीं होता है। परमेश्वर के वचन में ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं दी गई है कि इस जीवन में गम्भीर बीमारी, सेहत के खो जाने या अन्य विनाशकारी परिस्थितियों के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। परन्तु हमें परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा अवश्य है कि वह हमें ''न कभी छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा'' (इब्रानियों 13:5)। हमें यह आश्वासन भी है:

> तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य केसहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको (1 कुरिन्थियों 10:13)।

आयत 10. यहां पर अपने मित्रों के लिए अय्यूब की शिफारिश से ही जिसमें अनुग्रहकारी और क्षमा करने वाला मन होना आवश्यक था **यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया**। परमेश्वर ने न केवल उसकी समृद्धि को बहाल कर दिया बल्कि **उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया**। अय्यूब ने अपनी सम्पत्ति की बहाली के लिए प्रार्थना नहीं की थी, बल्कि उसने अपने मित्रों के लिए परमेश्वर के पास आत्मिक बहाली की प्रार्थना की; फिर भी अंत में उसे भौतिक आशीष से आशीष भी दी गई।

आयत 11. अय्यूब की परमेश्वर के साथ सहभागिता ही बहाल नहीं हुई बल्कि अपने परिवार और अपने मित्रों के साथ संगति भी बहाल कर दी गई। पुस्तक में पहले अय्यूब ने

संकेत दिया था कि उसे लगा कि उन लोगों ने उसे त्याग दिया है, उन लोगों ने जिन्हें उसे ज़रूरत के समय उसकी सहायता करनी चाहिए थी (19:13–22)। उनकी नए सिरे से बनी संगति अय्यूब के घर में इकट्ठे खाना खाने के द्वारा दिखाई गई।

और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी, उस सब के विषय उन्होंने विलाप किया, और उसे शान्ति दी। यह बात 2:11 का स्मरण दिलाती है जहां तीनों मित्र अय्यूब के साथ "विलाप" (*nud, नड*) और उसे "शांति" (*nacham, नाचाम*) देने के लिए आए। यहां उन्हीं इब्रानी शब्दों का इस्तेमाल किया गया। यह लोग अय्यूब को यहां पर शांति देने के लिए क्यों आए थे? जॉन ई. हार्टले ने सुझाव दिया, "शायद उनका काम मानवीय स्वभाव के साथ मेल खाता है जो मुसीबत की मार पड़ने और उसका परिणाम सामने आने के बाद होने वाले बड़े नुक्सान सहने वाले व्यक्ति की सहायता के लिए आता है।"[15]

और उसे एक एक सिक्का और सोने की एक एक बाली दी। "सोने का एक एक सिक्का" वाक्यांश *q^eśitah* (*क़सिटाह*) का अनुवाद है। रोअले ने बताया, "यह चांदी का असली टुकड़ा था, जिसका उल्लेख [और कहीं उत्पत्ति 33:19 और यहोशू 24:32 में हुआ है], इसलिए पुरखाओं के युग की कहानी ने इसका इस्तेमाल उपयुक्त रूप में हुआ है।"[16] ये दोनों संदर्भ अय्यूब के भूमि खरीदने के सम्बन्ध में है। "बाली[यां]" स्त्रियों द्वारा नाचने (उत्पत्ति 24:47; नीतिवचन 11:22; यशायाह 3:21) और पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों द्वारा कान में पहनी जाती थी (उत्पत्ति 35:4; निर्गमन 32:2, 3; न्यायियों 8:24, 25)।

आयत 12. यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी। उसके मवेशियों की गिनती दोगुणी हो गई जैसा कि आयत 10 में संकेत है। अपने बड़े दु:ख से पहले अय्यूब के पास "7,000 भेड़ बकरियां, 3,000 ऊंट, 500 जोड़ी बैल, 500 गदहियां" थीं (1:3)। बाद में उसके पास 14,000 भेड़ बकरियां, 6,000 ऊंट, 1,000 जोड़ी बैल, और 1,000 गदहियां थीं।

आयत 13. अय्यूब और उसकी पत्नी के पास दस और बच्चे हुए, **सात बेटे और तीन बेटियां**। कुछ अर्थ में यह सात बेटे और तीन बेटियां की जगह थे (1:2) जिनकी कहानी के आरम्भ में मृत्यु हो गई थी (1:18, 19)।

आयत 14. यह दिलचस्प बात है कि बेटियों के नाम (बेटों के बजाय) दिए गए हैं: **यमीमा**, **कसीआ** और **केरेन्हप्पूक**। प्रत्येक नाम सुन्दरता या मनोहरता या दोनों को दर्शाता है। "यमीमा" का अर्थ "फाख्ता" या "जंगली कबूतर" है जो अपनी आंखों की सुन्दरता या अपनी आवाज की मिठास के लिए जानी जा सकती है (श्रेष्ठगीत 1:15; 2:14; 5:2; 6:9)। "कसीया" का अर्थ "कीसिया" है जो खुशबू के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली दालचीनी की एक किस्म है (भजन संहिता 45:8; नीतिवचन 7:17)। "केरेन्हप्पूक" का अर्थ है, "सुरमे का सिंग [या शीशी]" जिसका इस्तेमाल प्राचीनकाल में आई शैडो के रूप में किया जाता था (2 राजाओं 9:30; यिर्मयाह 4:30)।

आयत 15. उस सारे देश में ऐसी स्त्रियाँ कहीं न थीं, जो अय्यूब की बेटियों के समान सुन्दर हों। वे निश्चय ही अपने नाम के अनुसार थीं! विशेषण शब्द "सुन्दर" (*yapeh, यापेह*) का अनुवाद "प्यारा" (NLT) या "खूबसूरत" (NIV) हो सकता है। अन्य स्त्रियां जिनका वर्णन इनके अनुसार हुआ है उनमें: सारा (उत्पत्ति 12:11, 14), राहेल (उत्पत्ति 29:17), दाऊद

की बेटी तामार (2 शमूएल 13:1), और अबिशग शुनेमवासी (1 राजाओं 1:3, 4), एस्तेर (एस्तेर 2:7), और सुलैमान की पत्नी (श्रेष्ठगीत 1:8, 15)।

और उनके पिता ने उनको उनके भाइयों के संग ही सम्पत्ति दी। यह बात अय्यूब की उदारता पर प्रकाश डालती है। आम तौर पर विरासत केवल बेटों को मिलती थी (देखें गिनती 27:1-11; 36:1-13)।

आयतें 16, 17. हम नहीं जानते कि अय्यूब इसके बाद **140 वर्ष** जीवित रहा या उसकी पूरी उम्र कितनी थी। जो भी हो उसने लम्बी उम्र भोगी। लम्बी उम्र पुरखाओं के युग में आम बात थी (उत्पत्ति 25:7; 35:28; 47:28; 50:22)। अपने नाती पोतों को देखना एक बड़ी आशीष माना जाता था (भजन संहिता 128:6; नीतिवचन 17:6)। अय्यूब को अपनी संतान को **चार पीड़ी तक** देखने का आवसर मिला था। **अन्त में अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया।** अब्राहम की मृत्यु के वर्णन के लिए ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल किया गया है। "और इब्राहीम का दीर्घायु होने के कारण अर्थात् पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया। और वह अपने लोगों में जा मिला" (उत्पत्ति 25:8)। चालीस साल शासन करने बाद राजा दाऊद, "और वह पूरे बूढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और विभव, मनमाना भोगकर मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ" (1 इतिहास 29:28)।

प्रासंगिकता

अय्यूब से जीवन के सबक (42:1-9)

अय्यूब की पुस्तक के अंत में अय्यूब ने यहोवा का उत्तर दिया (42:1-6); फिर यहोवा ने तीनों मित्रों से बात की (42:7-9)। इस वचन से हम तीन कीमती सबक सीख सकते हैं।

परमेश्वर के प्रति पश्चात्तापी होना (42:1-6)। अय्यूब ने इस बात को माना कि जितना उसे वास्तव में पता था उसने उससे कहीं अधिक बोल दिया था। उसने अपना अपने मुंह में डाल दिया था, जैसा कि आम तौर पर हम डाल लेते हैं। हमारी बोल-चाल से सम्बन्धित बात जग-जाहिर होती हैं। याकूब ने कहा, "इसलिए कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है" (याकूब 3:2)। अय्यूब को उसे अपनी गलती बता दिए जाने के बाद उसने मन फिरा लिया। हमें अपने सृष्टिकर्त्ता के प्रति वैसा ही पश्चात्तापी मन रखना चाहिए। यूहन्ना ने मसीही लोगों से अपने पाप के बारे में परमेश्वर के सामने बेबाक होने को कहा। जो यह मान लेने से इनकार करते हैं कि उनमें पाप है वे केवल अपने को धोखा दे रहे होते हैं। इसके विपरीत जो लोग मन फिराकर अपने पापों को परमेश्वर के सामने मान लेते हैं उनके पाप मसीह के लहू के द्वारा लगातार धोए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:6-10)।

परमेश्वर के प्रतिनिधि होना (42:7)। परमेश्वर अय्यूब के तीनों मित्रों से नाराज था क्योंकि उन्होंने उसे गलत पेश किया था। उन्होंने अय्यूब से बार बार कहा था कि परमेश्वर उसे उसके पापों का दण्ड दे रहा है जबकि ऐसा था नहीं। मसीही लोगों के रूप में हमें परमेश्वर और पुत्र यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व सही ढंग से करना चाहिए। यदि हम परमेश्वर के लोग होने का दावा

करते हैं परन्तु हमारे जीवन पवित्र नहीं हैं। तो हम उसे गलत ढंग से पेश करते हैं। यदि हम यीशु के पीछे चलने का दावा करते हैं परन्तु उसके प्रेम और करुणा को नहीं दर्शाते हैं तो हम उसे गलत पेश करते हैं। मसीह के लिए दूसरों को जीतने के अपने प्रयासों में पौलुस ने एक राजदूत के रूप का इस्तेमाल किया: ''सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानों परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो'' (2 कुरिन्थियों 5:20)। जिस प्रकार से अमेरिका का राजदूत किसी बाहरी देश में उस देश का प्रतिनिधित्व करता है, वैसे ही हमें संसार में मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाया गया है।

परमेश्वर के सामने सिफारिश करना (42:8, 9)। यह तथ्य कि अय्यूब के मन में तीनों मित्रों के प्रति कोई रंज नहीं था। उसके स्वभाव के बारे में बहुत कुछ बता देता है। उसने न केवल उन्हें क्षमा कर दिया बल्कि उनके पापों के कारण उनके लिए सिफारिश भी की। उन्होंने परमेश्वर के सामने सात बैल और सात मेढ़े चढ़ाए और अय्यूब ने उनके लिए प्रार्थना की। अन्य लोगों के उदाहरण जिनके मन क्षमा करने वाले थे, उनमें से यूसुफ और स्तिफनुस का नाम आता है। दोनों को क्रोध करने का अधिकार था। यूसुफ के भाइयों ने उसे गुलाम बनाकर बेच डाला था। स्तिफनुस के भाइयों ने उस पर पथराव किया था पर फिर भी दोनों ने क्षमा मांगी। यूसुफ ने अपने भाइयों को समझाया कि परमेश्वर के इंतजाम से ही वह उनके जीवनों की रक्षा के लिए मिस्र में आया था। उसने यह सुनिश्चित किया कि उनके रहने और उनके भेड़ बकरियों को पालने के लिए उन्हें खूब भोजन और अच्छी जमीन मिले (उत्पत्ति 45:4-11)। स्तिफनुस पर जब क्रूद्ध भीड़ के द्वारा पथराव किया जा रहा था तो भूमि पर गिरकर वह पुकारा, ''हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा'' (प्रेरितों 7:60)। यीशु का क्षमा करने वाला मन सबके लिए उदाहरण था। क्रूस पर लटके हुए उसने अपने सताने वालों को बुरा भला नहीं कहा या उन्हें कोई श्राप नहीं दिया। इसके बजाय उसने पुकारकर कहा, ''हे पिता, इन्हे क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। बेशक यह आसान तो नहीं है परन्तु हमें अपने शत्रुओं को क्षमा करना और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए (मत्ती 5:44)।

परमेश्वर की बड़ी सामर्थ (42:2)

यहोवा के दूसरे उपदेश के खत्म हो जाने के बाद अय्यूब ने विनम्रतापूर्वक मान लिया, ''मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती'' (42:2)। आंधी में परमेश्वर के साथ मुलाकात ने अय्यूब को अपने दु:ख को समझने में सहायता की। उसने अपने आपको यहोवा की समझ में भरोसा रखने के लिए छोड़ दिया। जो वायुमण्डल तथा पृथ्वी को सम्भालता है निश्चित ही उसे मालूम था कि उसके लिए क्या बेहतर है।

परमेश्वर की बड़ी सामर्थ से सम्बन्धित अय्यूब की बात पूरी बाइबल में गूंजती है। अब्राहम और सारा बच्चे जनने की उम्र को पार कर चुके थे पर फिर भी परमेश्वर ने इस बुजुर्ग दम्पत्ति को बेटा देने का वायदा किया। जब सारा ऐसे सुझाव पर हंसने लगी तो प्रभु ने पूछा, ''क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है ?'' (उत्पत्ति 18:14)। एक साल बाद सारा की गोद में इसहाक (''हंसी'') नामक बालक था।

इस्राएलियों के मिस्र में से निकलने के बाद लोग शिकायत करने लगे क्योंकि उन्हें केवल

मन्ना ही खाने को मिलता था चाहे यह आकाश से मिलने वाली चमत्कारी रोटी थी! उन्हें मिस्र की याद सताने लगी। उन्हें वहां पर मिलने वाली मछली और सब्जियां याद आने लगीं। परमश्ेवर के लोगों को गुलामी के देश में कड़ा परिश्रम और दमन इतनी जल्दी भूल गया। उनकी शिकायतों के कारण परमेश्वर ने मूसा से वायदा किया कि उन्हें पूरा महीना खाने को मांस मिलेगा। मूसा ऐसे सुझाव को सुनकर दंग रह गया, क्योंकि वे 600,000 से अधिक योद्धा थे जिनमें स्त्रियां और बच्चे अलग से थे। परमेश्वर ने उत्तर दिया, ''क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है?'' (गिनती 11:23)। उसने खाने के लिए इतने बटेर दे दिए कि प्रतीकात्मक रूप में कहें तो उनके नाक में से बाहर आने लगे।

जब जिब्राइल स्वर्गदूत मरियम के पास आया, जिसकी मंगनी नासरत में यूसुफ के साथ हुई थी, तो उसने उससे कहा कि वह गर्भवती होगी और एक बच्चे को जन्म देगी। इस पुत्र ने वास्तव में परमप्रधान का पुत्र यानी परमेश्वर का पुत्र कहलाना था। उसने एक अनादि राज्य के ऊपर दाऊद के सिंहासन पर भी बैठना था! क्योंकि वह तो कुंवारी थी इसलिए स्वाभाविक रूप में मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा कि यह कैसे हो सकता है। यह समझाने के बाद कि पवित्र आत्मा चमत्कारी ढंग से उसके ऊपर छाया करेगा, स्वर्गदूत ने अपनी टिप्पणियां यह कहते हुए समाप्त कीं, ''जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता'' (लूका 1:37)। मरियम ने परमेश्वर के दूत पर विश्वास किया और अंततः जगत के उद्धारकर्त्ता यीशु को जन्म दिया।

परमेश्वर की असीम सामर्थ के और कई हवाले बताए जा सकते हैं। शायद इफिसियों 3:20, 21 में पौलुस का स्तुतिगान सबसे बढ़िया है: ''अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥'' परमेश्वर आज भी सर्वसामर्थी है, जो अपनी सिद्ध इच्छा को पूरी करने के लिए निर्बल तथा त्रुटिपूर्ण लोगों में और उनके द्वारा काम करता है।

''इसके बाद वे खुशी खुशी रहने लगे'' (42:10-17)

हम में से अधिकतर लोगों को ऐसी कहानी अच्छी लगती हैं जिनका अंत सुखद हो। संड्रेला बहुत से लोगों की पसंदीदा कहानी रही है क्योंकि अंत में सौतेली बेटी को जिसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता रहा था अपना राजकुमार मिल जाता है और चीथड़े पहनने की जगह अब धनवान हो जाती है ''और इसके बाद वे खुशी-खुशी रहने लगते हैं।'' शायद हमें ऐसी कहानी इसलिए पसंद हैं क्योंकि यह हमें अपने भविष्य की आशा देती है। कई बार हम कहते हैं, ''अंत भले का भला।''

बहुत से लोग अय्यूब की पुस्तक के आरम्भ तथा अंत से परिचित हैं, परन्तु लोगों का ध्यान बीच के भाषणों पर जो निराशा और आशा के बीच बदलते रहते हैं, कम जाता है। हम आरम्भ के ऊपर ज़ोर देते हैं क्योंकि यह अय्यूब के दुःख का सामना करने को दिखाता है। हम अंत पर इसलिए ज़ोर देते हैं क्योंकि अंत में वह इन सब में से निकल गया और सब ठीक हो गया। अय्यूब ने यहोवा में भरोसा रखना सीख लिया। उसने उतावली में कहे गए शब्दों से मन फिराया और अपने मित्रों के लिए सिफारिश की जिन्होंने परमेश्वर को गलत ढंग से पेश किया

था (42:1–9)। उसके बाद परमेश्वर ने अय्यूब की किस्मत फेर दी। फिर से उसके परिवार के लोग और मित्र उसके साथ मिलने के लिए आए। यहोवा ने उसकी सम्पत्ति को दोगुना कर दिया। उसे 14,000 भेड़ों, 6,000 ऊंटों, 1,000 बैलों, और 1,000 गधों की आशीष दी। एक बार फिर से उसने अय्यूब को दस बच्चे दिए जिसमें से सात बेटे और तीन सुन्दर बेटियां थीं। अय्यूब को तंदुरुस्ती फिर से मिल गई और वह उसके बाद काफी देर तक जीवित रहा और तंदुरुस्त रहा (42:10–17)।

सच्चाई यह है कि इस जीवन में हो सकता है कि "इसके बाद खुशी खुशी रहे, हमारे साथ न हो।" परमेश्वर ने हम से ऐसा कोई वायदा नहीं किया है कि यह जीवन फूलों की सेज होगा। वास्तव में यीशु ने कहा कि इस जीवन में हमें कठिनाइयां आएंगी। परन्तु उसने आगे कहा कि उसने संसार को जीत लिया है (यूहन्ना 16:33)। यीशु ने इस जीवन में खुद दु:ख सहे। उसे नासरत के उसके अपने गृहनगर के साथ साथ उसके अपने ही परिवार के लोगों द्वारा (कुछ समय के लिए) ठुकरा दिया गया था। बहुत से लोग जो उसके पीछे चले थे वे शिष्यता का मोल भारी होने पर वापिस चले गए थे। अंत में यहूदी अगुओं ने उसकी मृत्यु की मांग की और उसे क्रूस पर लटका दिया गया। यह गुलामों तथा अपराधियों के लिए दिए जाने वाले दण्ड का सबसे क्रूर रूप था। फिर भी परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिला दिया! यह जीवन चाहे कठिन साबित हो सकता है पर यीशु के जी उठने के द्वारा हमें "इसके बाद खुशी खुशी" स्वर्ग में उसके साथ रहने की आशा है। पौलुस जो कि दु:ख से भली भांति परिचित था ने यह प्रोत्साहन दिया:

> इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं (2 कुरिन्थियों 4:16–18; NIV)।

डी. स्टिवर्ट

क्रूस का यह ओर

क्रूस के इस ओर रहते हुए हमें वह दृष्टिकोण और नज़रिया मिला है जो अय्यूब और उसके मित्रों को नहीं मिला था। मसीह के दु:खों से हमें यह मिलता है। हमें पक्का आश्वासन हो सकता है कि हमारा छुड़ाने वाला जीवित है और परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता मसीह के द्वारा सम्भव है, जीवन में फिर चाहे जैसे भी हों।

अय्यूब की तरह, हो सकता है कि हमें यह समझ में न आए कि जीवन में दु:ख क्यों आते हैं। जवान मां कैंसर के कारण क्यों मर गई? पिता हार्ट अटैक से क्यों मर गया? बे–मतलब की दुर्घटना में इतना प्यारा बच्चा क्यों मर गया? त्रासदियों के बीच में भी मसीही लोगों को परमेश्वर के प्रेम और लगाव से प्रोत्साहित होना चाहिए: "इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए" (1 पतरस 5:6, 7)।

डी. शैकलफोर्ड

टिप्पणियां

[1]सेमुएल टेरियन, ''द याहवे स्पीचस ऐंड अय्यूब'स रिस्पोंसस,'' *रिव्यू ऐंड एक्सपोज़िटर* 68 (1971): 505. [2]एबरहार्ड बामैन, ''ידע अंड सीन डेरिवेट,'' *ज़ेशरिफ्ट फियर डाई अल्टेस्टामेंलिच विसेनशैफ्ट* 28 (1909): 30. अंग्रेज़ी अनुवाद मैंने किया है। [3]मोज़ज़ मेमोनाइड्स, *द गाइड फ़ॉर द परप्लेक्स्ड,* 2रा सम्पा, ट्रांस. एम. फ्रीलैंडर (लंदन: रूटली ऐंड केगन पॉल, 1904), 297–98. [4]वहीं। [5]वहीं, 300. [6]''जानना'' और ''ज्ञान'' के शब्द पूरी पुस्तक में अय्यूब और उसके तीनों मित्रों के भाषणों (5:27; 8:8, 9; 9:2; 10:2; 11:6, 8; 12:3; 13:2, 18, 23; 15:9; 19:6, 25; 20:4; 21:27; 23:3; 24:1; 30:23), एलीहू के भाषणों (32:6, 10, 17; 34:33; 36:3, 4; 37:7), और यहोवा के भाषणों (38:4, 18, 21, 33; 39:1, 2) में मिलते हैं। [7]ए. एस. पीक, *अय्यूब: इंट्रोडक्शन, रिवाइज़ड वर्ज़न विद नोट्स ऐंड इंडेक्स,* द सेंचुरी बाइबल (एडिनबर्ग: टी. सी. ऐंड ई. सी. जैक, 1904), 343. [8]द *इंटरप्रेटर'स बाइबल,* सम्पा. जॉर्ज आर्थर बट्रिक (नैशविल: एबिंगडन प्रैस, 1954), 3:1192–93 में सेमुएल टेरियन, ''द बुक ऑफ़ अय्यूब: इंट्रोडक्शन ऐंड एक्सेजेसिस।'' [9]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 549. [10]वहीं, 637.

[11]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 342. [12]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 772.[13]रोअले, 344. [14]वहीं, 343. [15]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 541. [16]रोअले, 345.